CBSE Test Paper 02

Ch-10 सियाराम शरण गुप्त

1. हाय! वही चुपचाप पड़ी थी। अटल शांति-सी धारण कर। कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
2. सुखिया के पिता पर कौन-सा आरोप लगाकर उन्हें दण्डित किया गया? एक फूल की चाह कविता के आधार पर लिखिए।
3. एक फूल की चाह कविता में मंदिर की भव्यता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
4. एक फूल की चाह कविता में महामारी अपना प्रचंड रूप किस प्रकार दिखा रही थी?
5. सुखिया के पिता को क्या सज़ा मिली? सज़ा काटने के बाद उसने अपनी बेटी को कहाँ और किस रूप में पाया? एक फूल की चाह कविता के आधार पर लिखिए।
6. एक फूल की चाह कविता में पिता अपनी बच्ची को माता के प्रसाद का फूल क्यों न दे सका?
7. एक फूल की चाह कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।
8. महामारी से सुखिया पर क्या प्रभाव पड़ा? इससे उसके पिता की दशा कैसी हो गई? एक फूल की चाह कविता के आधार पर बताइए।

CBSE Test Paper 02

Ch-7 सियाराम शरण गुप्त

Answer

1. सुखिया का पिता अपनी मरणासन्न पुत्री को देखकर सोच रहा था कि सुखिया, जो दिन भर खेलती-कूदती और यहाँ-वहाँ भटकती रहती थी, बीमारी के कारण शिथिल और लंबी शांति धारण कर लेटी पड़ी है।
2. सुखिया के पिता को अछूत होते हुए भी चुपके से मन्दिर में घुसकर मन्दिर की पवित्रता नष्ट करने का आरोप लगाकर दण्डित किया गया।
3. देवी का विशाल मंदिर ऊँचे पर्वत की चोटी पर स्थित था। यह मंदिर बहुत बड़ा था। मंदिर की चोटी पर सुंदर सुनहरा कलश था जो सूर्य की किरणें पड़ने से कमल की तरह खिल उठता था। वहाँ का वातावरण धूप-दीप के कारण सुगंधित था। अंदर भक्तगण मधुर स्वर में देवी का गुणगान कर रहे थे।
4. बस्ती में महामारी दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी। यहाँ कई बच्चे इसका शिकार हो चुके थे। जिन माताओं के बच्चे अभी इसका शिकार हुए थे, उनका रो-रोकर बुरा हाल था। उनके गले से क्षीण आवाज़ निकल रही थी। उस क्षीण आवाज़ में हाहाकार मचाता उनका अपार दुख था। महामारी के इस प्रचंड रूप में चारों ओर करुण क्रंदन सुनाई दे रहा था।
5. सुखिया के पिता को सात दिन के कारावास की सज़ा मिली, वह सज़ा काटकर आया, घर पर उसकी बेटी नजर नहीं आई। किसी परिचित ने उसे बताया कि वह मर गई, लोग उसे शमशान की ओर ले गए हैं।
6. पिता जब मंदिर से देवी के प्रसाद का फूल लेकर बाहर आने वाला था, तभी कुछ भक्तों की दृष्टि उस पर पड़ गई। उन्होंने अछूत कहकर उसे मारा-पीटा और न्यायालय तक ले आए। यहाँ उसे सात दिन का कारावास मिला। इस बीच उसकी बेटी इस दुनिया से जा चुकी थी और वह अपनी बेटी को देवी माँ के प्रसाद का फूल न दे सका।
7. एक मरणासन्न अछूत कन्या के मन में यह चाह उठी कि काश ! कोई उसे देवी के चरणों में अर्पित किया हुआ एक फूल लाकर दे दे । कन्या के पिता ने बेटी की मनोकामना पूर्ण करने का बीड़ा उठाया। वह देवी के मंदिर में जा पहुँचा। देवी की आराधना भी की पर उसके बाद वह देवी के भक्तों को खटकने लगा। मानव मात्र को एकता का सन्देश देने वाली देवी के सवर्ण भक्तों ने उस विवश लाचार आकांक्षी अछूत पिता के साथ बदसलूकी की और उसे मंदिर में प्रविष्ट होने के अपराध में सात दिन के कारावास का दंड दिया। इन सात दिनों में उसकी बेटी का देहांत हो गया।
8. महामारी की चपेट में आने से सुखिया को बुखार हो गया। उसका शरीर तेज़ बुखार से तपने लगा। तेज़ बुखार के कारण वह बहुत बेचैन हो रही थी। इस बेचैनी में उसका उछलना-कूदना न जाने कहाँ खो गया। वह भयभीत हो गई और देवी के प्रसाद का एक फूल पाने में अपना कल्याण समझने लगी। उसके बोलने की शक्ति कम होती जा रही थी। धीरे-धीरे उसके अंग शक्तिहीन हो गए। उसकी यह दशा देखकर सुखिया का पिता चिंतित हो उठा। उसे कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। सुखिया के पास बैठे हुए उसे यह भी पता नहीं चल सका कि कब सूर्य उगा, कब दोपहर बीतकर शाम हो गई।